बरेली जनपद के सरस्वती शिशु मंदिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

धनंजय कुमार (शोधार्थी)
महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखंड यूनिवर्सिटी, बरेली

शोध सारांश

यह शोध कार्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों के अध्ययन से संबंधित है। जिसको सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन हेतु शैरी एवं वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का चयन किया गया है। इस अध्ययन में सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मंदिर में कार्यरत 144 शिक्षकों को यादृ च्छिक विधि से चयन किया गया है जिसमें महिला और पुरुष शिक्षिका शामिल है। इस शोध के निष्कर्ष इस प्रकार प्राप्त हुए। सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक एवं शक्ति मूल्य सार्थक रूप से अधिक जबकि,आर्थिक मूल्य सार्थक रूप से कम पाया गया ।

Keywords- धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य,. स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य।

पृष्ठभूमि :–

शिक्षा एक ऐसा पद है जिसका उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। प्राचीन काल में गुरू एवं शिष्य या दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि ज्ञानी एवं अज्ञानी के बीच ज्ञान के लेन–देन की सुव्यवस्थित प्रकिया को शिक्षा कहा जाता है। इस काल में गुरू को अपने शिष्यों को कुछ आवश्यक तथ्यों को कंठस्थ कराना पड़ता है और यही उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मान लिया जाता है। इस तरह की शिक्षा देने में शिष्य की आयु,रूचि एवं योग्यता आदि पर कुछ भी ध्यान नही दिया जाता है। शिक्षक का कर्तव्य शिष्य को मात्र सूचना दे देना होता है। स्पष्टतः इस तरह की शिक्षा बाल–केन्द्रित न होकर ज्ञान–केन्द्रित है। शिष्य चाहें बालक हो या व्यस्क उसे एक ही तरह की शिक्षा दी जाती है।

आधुनिक काल में शिक्षा का अर्थ व्यक्तियों के सर्वागीण विकास के लिए एक निरंतर चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति में निहित क्षमताओं का सही–सही उपयोग विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है। शिक्षा जीवन का आधार है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है तथा पशुओं से अलग करता है। शिक्षा बालक के जन्म से मष्त्यु तक चलने वाली एक प्रक्रिया है। शिक्षा ही हमारे जीवन को सुलझाती है हर प्रकार से शिक्षा का उद्देश्य केवल सभ्य मनुष्य का निर्माण करना है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल के पुष्प की भॉति प्रफुल्लित एवं सुगन्धित हो उठता है। हमारी शिक्षा वह नहीं जो हम रटकर किताबी ज्ञान को प्राप्त करें। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे मानव मात्र का कल्याण हो और कल्याण तभी सम्भव है जब हम अपने से ज्यादा दूसरे के विषय में सोचेंगे जब तक हम स्वार्थ रूपी सागर में गोते लगायेंगे तब तक हमारा हदय पवित्र नही है अगर कोई भूखा मर रहा है तब मन्दिर में भोग लगाना पुण्य नही है, पाप है।

जब मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो तब हवन में घी जलाना अश्रनुषिक कर्म है। वह भय और अंधविश्वास को नही मानते थे वह कहा करते थे कि "किसी बात पर सिर्फ इसीकारण विश्वास न कर लो कि वह किसी ग्रन्थ में लिखी हैं। किसी बात पर इसलिए विश्वास न करना कि वह परम्परा से चली आ रही हैं। अपने लिए सत्य की स्वंय ही उपलब्धि को उसे तर्क की कसौटी पर कहों इसी को अनुभूति कहते हैं।"

किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्ही के आधार पर अच्छा–बुरा या सही–गलत की परख की जाती है। इंसान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना परिवार ही होता है और परिवार समाज का एक अंग है उसके बाद उसका विद्यालय, जहॉ से उसे शिक्षा हासिल होती है। परिवार, समाज और विद्यालय, के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है। प्राचीन काल भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा जरूरी होती थी। लेकिन वक्त के साथ यह कम होता चला गया और आज वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की भागीदारी लगातार घटती जा रही है। सांप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा, असहिष्णुता और चोरी–डकैती आदि को बढती प्रवृत्ति समाज में मूल्यों के विघटन के ही उदाहरण हैं। भारतीय संविधान का अनुच्छेद–15 किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव की मुखालफत करता है। लेकिन सच यह है कि संविधान लागू होने के 65 साल बाद भी हमारे विद्यालयों में जाति, धर्म, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव करने वाले उदाहरण आसानी से मिल जायेंगें। विभिन्न विद्यालयों में अपने शिक्षण अनुभवों के दौरान मैने देखा कि विद्यालय में पानी भरने के अलावा सफाई का काम लडकियों से ही कराया जाता है। अध्यापक पीने के लिए पानी कुछ खास जाति के बच्चों को छोड़ कर दूसरी जातियों के बच्चों से ही मंगवाते हैं। ऐसे उदाहरण देखने में आए कि बच्चे मिड–डे मील अपनी–अपनी जाति के समूह में ही बैठ कर खा रहे थे। स्कूल में कबड्डी जैसे खेल सिर्फ लड़के खेलते हैं। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हमारे आस–पास के स्कूलों में देखने को मिल जायेंगे। हाल ही में नई दिल्ली स्थित एन0सी0ई0आर0टी0 ने वर्तमान सम्दर्भ में प्रासंगिक मूल्यों की सूची तैयार की है। इसका बदलाब हम प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में भी देख सकते है। कुछ साल पहले तक पाठ्यपुस्तकों में भी भेदभाव करने वाले चित्र नजर आते थे, मसलन झाड़ू लगाती हुई लडकी, खाना बनाती औरतें, हल चलाते हुए किसान और उपदेश देते गुरू आदि। लेकिन पाठ्यपुस्तकों में बदलाव के बाद इन चित्रों मे गुणात्मक बदलाव देखने को मिलता है। मसलन, सफाई करते हुए लड़के और खेलती हुई लड़कियां आदि। लेकिन यहॉ ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिन मूल्यों की बात पाठ्य–पुस्तक करती है, उनका उपयोग शिक्षक विद्यालय में कैसे कर रहा है। यह एक अजीब विडम्बना है कि पाठ्यपुस्तकों से शिक्षाविदों ने सामाजिक और मानवीय भेदभाव को अभिव्यक्त करने वाले चित्रों को तो बदल दिया, मगर विद्यालयी वातावरण में वह आज भी उसी शक्ल में मौजूद है।

आमतौर पर शिक्षक बच्चों को पाठ पढ़ाना और नैतिक सीख देना ही काफी समझते है और विद्यार्थी के व्यवहार में मूल्यगत बदलाव पर कम ध्यान देते है, क्योकि जिस जाति या समाज से शिक्षक सम्बन्ध रखता है, उसके मुताबिक उसकी अपनी कुछ मान्यताएॅ होती है। उन अतार्किक जड़बद्ध सामाजिक–धार्मिक पूर्वाग्रहों की वजह से शिक्षक तर्कशील होकर नहीं सोच पाता है ,क्योंकि उस पर जाति,धर्म और समाज विशेष की पहले से बनी धारणाएॅ हावी रहती है। उन्ही रूढ़िबद्ध मान्यताओं के अनुसार वह चलना चाहता है। लेकिन जब तक शिक्षक अपने आपको तर्क की कसौटी पर रखकर नहीं सोंचेगा तब तक वह न तो अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है और न ही विद्यार्थियो में मूल्यों के प्रति आस्था विकसित कर सकता है। एक शिक्षक का फर्ज बनता है कि वह पाठ्य–पुस्तको में दिए गए 'मूल्यों ' का महत्व समझे, उन्हें अपने जीवन व्यवहार का हिस्सा बनाए, फिर बच्चों के दैनिक व्यवहार में लाने का प्रयास करे। स्कूलों से समाज की अपेक्षा होती है कि वह तर्कशील मनुष्य प्रदान करें। इसलिए स्कूलों में ही जरूरी मानव मूल्यों की शिक्षा नही दी गई तो कही न कही राष्ट्र के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाने से हम चूक जाएंगे। लिहाजा आवश्यक है कि पाठ्य–पुस्तकों मे उल्लिखित मूल्यों के प्रति शिक्षक समाज चिंतनशील हो, उन्हें बच्चों के दैनिक जीवन में लेकर आयें।

मूल्यों की अवधारणा को प्राचीन मनीषियों ने सत्यं,शिवं,सुन्दरम् की महान धारणा के रूप में हमारे मध्य स्थापित किया। मूल्यों के सम्बन्ध में प्रचलित है कि मूल्य मनुष्य की इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं। मूल्य शाश्वत है। मूल्य जीवन के सभी अच्छे कार्यों का एक मात्र साधन है। मनुष्य की सोच बस अपने तक ही सीमित हो गई है मनुष्य के अन्दर आज सहानुभूति, प्रेम व इंसानियत का अभाव है मनुष्य भौतिकता की तरफ इतना आकर्षित है, कि वह आध्यात्मिकता से दूर हो गया है। इसलिए आज मूल्यों के विकास की बहुत आवश्यकता है। मूल्य समाज से ग्रहण किये जाते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य किसी समाज को उसका विशिष्ट चरित्र प्रदान करते हैं। कोई समाज अपने विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से ही जाना जाता हैं। ये मूल्य अपने आप से साध्य होते हैं। जिस प्रकार एक पुष्प को सुगन्ध से दूर नहीं किया जा सकता है। उसी प्रकार मूल्यों को भी मनुष्यों से अलग नहीं किया जा सकता हैं। मूल्य दिया और बाती के समान है। जिस प्रकार बाती के बिना दिये को प्रज्वलित नहीं किया जा सकता है उसी प्रकार बिना मूल्यों की अवधारणा, सच्चाई, सुन्दरता एवं अच्छाई पर आधारित है। मनुष्य के जीवन मे मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। किन्तु आज आधुनिकता के कारण अनेकों परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं। आज औद्यौगिक उन्नति व वैज्ञानिक प्रगति के विश्व की काया ही पलट कर रख दी है। आधुनिक युग में भौतिक सुख सुविधाओं के लिए व्यक्ति नैतिक एवं अनैतिक पर विचार किये बिना भी अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में लगा है फलतः समाज में मूल्यों का ह्रास दृष्टिगोचर होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में व्यक्ति में सही एवं गलत तथा अच्छे व बुरे की पहचान करने की सामर्थ्य शक्ति समाप्त होती जा रही है। यह सब मूल्यों के ह्रास का परिणाम है क्योंकि मूल्य ही वह मापदण्ड होते हैं। जिसके आधार पर सही क्या और गलत क्या है इसका निर्धारण करने में व्यक्ति समर्थ हो पाता मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है, उनका धर्म है एवं उनका अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है अपितु मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्वपूर्ण है मूल्य मानव के व्यक्तित्व के अंतरात्मा भाव भीतरी परत के रूप में है यदि व्यक्ति को जानना है तो उसके मूल्यों को जानना होगा। मूल्यों को मानव से अलग नहीं किया जा सकता है। मूल्य मानव जीवन को एक निश्चित दिशा प्रदान करते है। इस दृष्टि से मूल्य संस्कार परम्परा मात्र है। सामाजिक अनुभूति आश्रित सामाजिक मान्यता प्राप्त है।

समस्या का कथन :–

''बरेली जनपद के सरस्वती शिशु मंदिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।'

समस्या का परिभाषीकरण–

सरस्वती शिशु मंदिर – प्रस्तुत अध्ययन में सरस्वती शिशु मंदिर से तात्पर्य अखिल भारतीय स्तर पर विद्या भारती द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों से है।

सरकारी प्राथमिक विद्यालय – सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से आशय बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित पॉचवी कक्षा तक के विद्यालयों से है।

शिक्षक के मूल्य – प्रस्तुत अध्ययन में मूल्य से आशय सरकारी प्राथमिक विद्यालय व सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों के धार्मिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, आर्थिक, सैद्धान्तिक एवं राजनैतिक मूल्यों से है।

शिक्षक – इस अध्ययन से शिक्षकों से तात्पर्य सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में सत्र 2016–2017 में कार्यरत महिला एवं पुरूष अध्यापको से है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
3. सरस्तवी शिशु मन्दिर के शिक्षकों के मूल्यों का लैंगिक आधार पर अध्ययन करना।
4. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का लैंगिक आधार पर अध्ययन करना।
5. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों व सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सरस्वती शिशु मन्दिर व सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत् शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन – प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद में आने वाले सरस्वती शिशु मंदिर व सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

1. यादव (2014) उत्तर प्रदेश के सरस्वती शिशु मन्दिरों में प्रान्तीय स्तर पर खेलों के लिये चुनी गयी बालिकाओं के मूल्यों का अध्ययन किया एवं निम्न निष्कर्ष प्राप्त कियेः– बालिकाओं में देश भक्ति मूल्य उच्च स्तर पर पाया गया उसे पश्चात् सामाजिक व धार्मिक मूल्यों को स्थान प्राप्त हुआ।, धार्मिक मूल्यों की अपेक्षा सामाजिक मूल्य अधिक पाये गये।

2.दास (2015) दास ने उड़ीसा के माध्यमिक स्कूल पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों में मूल्य शिक्षा के क्षेत्र के अध्ययन में पाया गया कि विभिनन आयोगों व कांफ्रेन्सों के प्रतिवेदनों व सुझावों के द्वारा सभी स्कूल पाठ्यक्रमों में नौ प्रकार के मूल्यों का समर्थन किया। सभी वर्गो के मूल्यों में सकारात्मक सह–सम्बनध पाया गया था। कुछ मूल्य जैसे सेवाभाव, सहयोग, सहायता, अनुसंधान व सार्वभौमिक प्रेम आदि में विशिष्टता पायी जाती गयी। माध्यमिक विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों में प्रत्यक्ष मूल्यों का अभाव था।

सर्वेक्षण विधि – इस अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के अन्तर्गत आने वाले बरेली तहसील के सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालय व सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत् शिक्षक जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है। न्यादर्श के रूप में कुल 28 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं 12 सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत् शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया इनकी संख्या 144 है। 74 शिक्षक सरस्वती शिशु मन्दिर से न्यादर्श के रूप में चयनित किये जिसमें 45 पुरूष एवं 29 महिला शिक्षक है एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालय से कुल 70 शिक्षकों न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये जिसमें 44 पुरूष शिक्षक एवं 26 महिला शिक्षक है।

अध्ययन हेतु प्रयुक्त उपकरण – प्रयुक्त अध्ययन हेतु उपकरण के रूप में **शैरी** एवं **वर्मा** द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का चयन किया गया इसमें कुल 40 प्रश्न हैं। जोकि दस मूल्यों का मापन करते हैं। इस परीक्षण में निम्नलिखित मूल्य शामिल होते हैं। 1. धार्मिक मूल्य 2. सामाजिक मूल्य 3. प्रजातांत्रिक मूल्य 4. सौन्दर्यात्मक मूल्य5. आर्थिक मूल्य 6. ज्ञानात्मक मूल्य 7. सुखात्मक मूल्य 8. शक्ति मूल्य 9. पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य 10. स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ – प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्र किये गये आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोंग किया गया है:–*मध्यमान मानक विचलन टी– परीक्षण*

आंकड़ों का विश्लेषण –

तालिका संख्या 4.1

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का विवरण

क्र. स.	मूल्य	सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों की संख्या (छ त्र 74)		सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की संख्या (छ त्र 70)		टी मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	धार्मिक मूल्य	51.74	06.42	**49.05**	06.84	2.41′
2.	सामाजिक मूल्य	47.74	08.09	47.74	07.18	0.00
3.	प्रजातांत्रिक मूल्य	52.81	07.39	53.10	07.19	0.24
4.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	49.54	07.47	50.99	07.21	1.11
5.	आर्थिक मूल्य	48.98	07.43	51.66	06.50	2.34′
6.	ज्ञानात्मक मूल्य	53.01	09.36	50.29	08.69	1.80
7.	सुखात्मक मूल्य	50.46	07.60	50.17	06.96	0.23
8.	शक्ति मूल्य	54.29	07.48	52.16	06.59	2.09′
9.	पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	45.51	08.14	46.65	07.22	0.88
10.	स्वास्थ्य मूल्य	45.20	08.68	47.39	07.73	1.59

''संकेत = 0.05 स्तर पर सार्थक है।

तालिका संख्या 4.1 को देखने से विदित होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में शक्ति मूल्य का मध्यमान सर्वाधिक 54.46 पाया गया। यह मध्यमान इन शिक्षकों में शक्ति मूल्य मं उच्च स्तर को व्यक्त करता है। सबसे कम मध्यमान स्वास्थ्य मूल्य एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का क्रमशः 45.20 एवं 45. 51 पाया गया। यह मध्यमान इन शिक्षकों में इन दोनों मूल्यों के निम्न स्तर पर उपस्थिति के द्योतक है शेष अन्य मूल्यों यथा धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 51.74, 47.74, 52.81, 49.54, 48.98, 50.01, 50.46 पाया गया से सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर उपस्थिति के द्योतक है। सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मानक विचलन को देखने से स्पष्ट होता है कि ज्ञानात्मक मूल्य का मानक विचलन सर्वाधिक 9.36 एवं सबसे धार्मिक मूल्य का मनक विचलन सबसे कम 6.42 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शि़क्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक असमानता पायी गयी तथा धार्मिक मूल्य से सबसे कम असानता पायी गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान सबसे अधिक 53.10 एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान सबसे कम 45.65 पाया गया। अन्य मूल्यों के प्राप्त मध्यमान प्रजातांत्रिक एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के मध्यमान के मध्य क्रमशः 53.10 एवं 46.65 के मध्य पाये गये। ये सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत उपस्थित के द्योतक है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों के मानक विचलन पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सबसे अधिक मानक विचलन 8.69 एवं सबसे कम आर्थिक मूल्य का मानक विचलन 6.20 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि इन शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक समानता थी जबकि आर्थिक मूल्य में सबसे कम असमानता पायी गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक एवं आर्थिक एवं शक्ति मूल्य के मध्य प्राप्त टी मान क्रमशः 2.41, 2.34 एवं 2.09, 0.05 स्तर पर सार्थक है। अन्य मूल्यों के टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं थे। अतः शक्ति मूल्य, आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना स्वीकृत नहीं की गयी। इसे यह निष्कर्ष निकला कि आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं शक्ति मूल्य में सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में शक्ति मूल्य एवं प्रजातान्त्रिक मूल्य ज्ञानात्मक मूल्य अधिक पाये गये जबकि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों प्रजातांत्रिक, शक्ति एवं आर्थिक इसका कारण यह हो सकता है कि आज आधुनिकता के युग में शिक्षक पूर्णतः आत्मनिर्भर बनना चाहता है कोई भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से खुद को निम्न नहीं समझता इसलिए खुद को अधिक शक्तिशाली बनाना चाहता है। इसलिए दोनों विद्यालयों के शिक्षकों में शक्ति मूल्य अधिक पाये गये। (2004) में सौम्या दीक्षित ने अपने लघु शोध प्रबन्ध माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन में भी शक्ति मूल्य की अधिकता पायी थी। जो इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों की पुष्टि करता है। सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों मे प्रजातान्त्रिक के मूल्य अधिकता का कारण हो सकता है कि भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है भारत के सभी नागरिक अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों को भली–भाँति समझते है शिक्षक देश के जिम्मेदार नागरिक होते है इसलिए वह प्रजातान्त्रिक मूल्यों में विश्वास रखते है। सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य उच्च स्तर का होने का कारण शिक्षकों की उच्च योग्यता हो सकती है।

तालिका संख्या 4.2

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के मूल्यों का विवरण

क्र.स.	मूल्य	सरस्वती शिशु मन्दिर पुरूष शिक्षकों की संख्या (छ त्र 45)		सरकारी प्राथमिक विद्यालय पुरूष शिक्षकों की संख्या (छ त्र 44)		टी मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	धार्मिक मूल्य	51.49	06.14	48.86	06.77	1.99
2.	सामाजिक मूल्य	48.13	08.99	47.61	07.31	0.30
3.	प्रजातांत्रिक मूल्य	53.28	07.59	53.14	07.05	0.10
4.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	50.44	07.16	52.25	07.23	1.17
5.	आर्थिक मूल्य	49.08	07.64	51.29	05.96	1.02
6.	ज्ञानात्मक मूल्य	53.26	08.87	52.16	07.56	0.62
7.	सुखात्मक मूल्य	48.95	07.45	49.30	06.68	0.22
8.	शक्ति मूल्य	54.02	07.58	52.77	06.98	0.91
9.	पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	44.77	08.03	46.00	06.59	0.78
10.	स्वास्थ्य मूल्य	43.04	08.33	45.93	07.14	1.52

तालिका संख्या 4.2 को देखने से विदित होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में शक्ति मूल्य का मध्यमान सर्वाधिक 54.02 पाया गया। यह मध्यमान इन शिक्षकों में शक्ति मूल्य मं उच्च स्तर को व्यक्त करता है। सबसे कम मध्यमान स्वास्थ्य मूल्य एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का क्रमशः 43.40 एवं 44. 77 पाया गया। यह मध्यमान इन शिक्षकों में इन दोनों मूल्यों के निम्न स्तर पर उपस्थिति के द्योतक है यथा धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 51.49, 48.13, 53.28, 50.42, 48.08, 53.26, 48.95 पाया गया से सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर उपस्थिति के द्योतक है। सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मानक विचलन को देखने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक मूल्य का मानक

विचलन सर्वाधिक 8.99 एवं धार्मिक मूल्य का मनक विचलन सबसे कम 06.14 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के पुरूष शिक्षकों के सामाजिक मूल्य धार्मिक मूल्य से सबसे अधिक असमानता पायी गयी तथा धार्मिक मूल्य में सबसे कम असमानता पायी गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान सबसे अधिक 53.14 एवं स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान सबसे कम 43.04 पाया गया। अन्य मूल्यों में यथा आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक, सुखात्मक, शक्ति, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के मध्यमान क्रमशः 48.86, 47.61, 52.25, 51.29, 52.16, 49.30, 52.77, 46.00 पाया गया। ये सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर के द्योतक है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों के मानक विचलन पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सबसे अधिक मानक विचलन ज्ञानात्मक मूल्य 07.56 एवं सबसे कम मानक विचलन पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य 06.59 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि इन शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक असमानता थी, जबकि पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में सबसे कम असमानता पायी गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मध्य प्राप्त टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गई। सरस्वती शिशु मन्दिर के पुरूष शिक्षकों से शक्ति मूल्य उच्च स्तर पर पाया गया इसका सम्भावित सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों का समाज में खुद को प्रतिष्ठित करने की इच्छा हो सकती है।

तालिका संख्या 4.3

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों के मूल्यों का विवरण

क्र. स.	मूल्य	सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला शिक्षकों की संख्या (छत्र 29)		सरकारी प्राथमिक विद्यालय के महिला शिक्षकों की संख्या (छत्र 26)		टी मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	धार्मिक मूल्य	53.00	05.77	48.88	07.49	2.25′
2.	सामाजिक मूल्य	46.36	07.24	48.00	07.06	0.85
3.	प्रजातांत्रिक मूल्य	51.93	06.74	52.35	07.40	0.21
4.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	48.20	07.63	48.11	05.68	0.50
5.	आर्थिक मूल्य	47.89	06.89	51.65	06.75	2.04′
6.	ज्ञानात्मक मूल्य	52.41	10.17	48.80	11.25	1.24

7.	**सुखात्मक मूल्य**	53.13	06.14	52.07	08.00	0.54
8.	**शक्ति मूल्य**	54.72	07.48	51.53	05.54	1.80
9.	**पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य**	46.37	07.96	47.15	08.68	0.34
10.	**स्वास्थ्य मूल्य**	47.79	08.71	50.03	07.87	1.00

''संकेत = 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 4.3 को देखने से विदित होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला शिक्षकों में शक्ति मूल्य का मध्यमान 54.22 सर्वाधिक पाया गया। यह मध्यमान इस महिला शिक्षकों में शक्ति मूल्य के उच्च स्तर को व्यक्त करता है। सबसे कम मध्यमान सामाजिक मूल्य एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा क्रमशः 46.38 एवं 46.37 पाया गया। शेष अन्य मूल्य यथा धार्मिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य एवं सुखात्मक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 53.00, 51.93, 48.20, 47.89, 52.41 एवं 53. 13 पाया गया से सभी मध्यमान शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर पर उपस्थिति के द्योतक है। सरस्वती शिशु मन्दिर की महिला शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मानक विचलन को देखने से स्पष्ट होता है कि ज्ञानात्मक मूल्य का मानक विचलन सर्वाधिक 10.17 एवं सबसे कम मानक विचलन धार्मिक मूल्य 05. 77 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर की महिला शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक विविधिता पायी गयी तथा धार्मिक मूल्य में सबसे कम विविधिता पायी गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों में प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान सबसे अधिक 52. 35 पाया गया एवं सबसे कम मध्यमान पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का पाया गया। शेष अन्य मूल्यों यथा धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, सुखात्मक, शक्ति एवं स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान क्रमशः 48.88, 48.00, 48.11, 51.65, 48.80, 52.07, 51.53, 47.15 एवं 50.03 पाया गया। यह सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर के द्योतक है। सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों के मूल्यों के मानक विचलन पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सबसे अधिक मानक विचलन ज्ञानात्मक मूल्य का 11.25 पाया गया एवं सबसे कम सौन्दर्यात्मक मूल्य 05.68 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक असमानता थी, जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य में सबसे कम विविधता पायी गई। सरस्वती शिशु मन्दिर की महिला शिक्षकों में शक्ति मूल्य एवं ज्ञानात्मक मूल्य उच्च स्तर का था कारण महिलाएँ आज अपने अधिकारों के प्रति जागरूकत है महिला सशक्त शक्ति बन चुकी है महिलायें भी समाज में आज पुरूषों के बराबर है इसलिए महिला शिक्षक भी अपनी शक्ति को पहचानते हुए शक्ति मूल्य अधिक महत्व देती है महिला शिक्षकों पुरूष शिक्षकों के मुकाबले अपने कर्त्तव्यों के प्रति अधिक सजग होती है ज्ञानात्मक मूल्य की अधिकता उनका अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग होने का संकेत है। सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों के धार्मिक एवं आर्थिक मूल्य के मध्य प्राप्त टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अन्य मूल्यों के टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः धार्मिक एवं आर्थिक मूल्य के सम्बन्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई। इससे यह निष्कर्ष निकला की सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला शिक्षकों के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् महिला

शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक मूल्य सार्थक रूप से अधिक एवं आर्थिक मूल्य सार्थक रूप से कम पाया गया है। अन्य मूल्यों के सम्बन्ध में दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के मध्य अन्तर औसत स्तर पर पाया गया।

तालिका संख्या 4.4

सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मूल्योंका विवरण

क्र. स.	मूल्य	सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला–पुरूष शिक्षकों की संख्या (छ त्र 28)		सरकारी प्राथमिक विद्यालय के महिला–पुरूष शिक्षकों की संख्या (छ त्र 26)		टी मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	धार्मिक मूल्य	51.65	08.45	55.66	07.49	2.05
2.	सामाजिक मूल्य	61.42	09.01	67.70	08.06	3.15''
3.	प्रजातांत्रिक मूल्य	40.93	06.63	71.66	07.90	4.40''
4.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	67.42	09.80	60.46	07.68	2.96'
5.	आर्थिक मूल्य	50.89	07.44	52.08	08.75	0.54
6.	ज्ञानात्मक मूल्य	58.36	08.22	54.03	08.90	1.87
7.	सुखात्मक मूल्य	55.13	05.02	60.37	8.00	2.87'
8.	शक्ति मूल्य	52.72	7.48	58.68	8.53	2.74'
9.	पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	40.37	06.07	42.12	7.68	0.93
10.	स्वास्थ्य मूल्य	47.79	7.71	42.46	6.87	2.71'

''संकेत = 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 4.4 को देखने से विदित होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान 67.42 सर्वाधिक पाया गया। यह मध्यमान इस महिला शिक्षकों में सामाजिक मूल्य के उच्च स्तर को व्यक्त करता है। सबसे कम मध्यमान प्रजातांत्रिक मूल्य एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य क्रमशः 40.93 एवं 40.37 पाया गया। शेष अन्य मूल्य यथा धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य शक्ति मूल्य स्वास्थ मूल्य एवं का मध्यमान क्रमशः 51.65, 50.89, 58.36,

55.13, 52.72 एवं 47.79 पाया गया से सभी मध्यमान शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर पर उपस्थिति के द्योतक है। सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मानक विचलन को देखने से स्पष्ट होता है कि सौन्दर्यात्मक मूल्य का मानक विचलन सर्वाधिक 09.80 एवं सबसे कम मानक विचलन आर्थिक मूल्य 07.44 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक विविधिता पायी गयी तथा स्वास्थ्य मूल्य में सबसे कम विविधिता पायी गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान सबसे अधिक 71.66 पाया गया एवं सबसे कम मध्यमान पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य का पाया गया। शेष अन्य मूल्यों यथा धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुखात्मक, शक्ति एवं स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान क्रमशः 55.66, 67.70, 60.46, 51.65, 52.08, 54.03, 60.37, 58.68 एवं 42.46 पाया गया। यह सभी मध्यमान इन शिक्षकों में इन मूल्यों के औसत स्तर के द्योतक है। सरकारी प्राथमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मूल्यों के मानक विचलन पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सबसे अधिक मानक विचलन ज्ञानात्मक मूल्य का 08.90 पाया गया एवं सबसे कम स्वास्थ्य मूल्य 06.87 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक असमानता थी, जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य में सबसे कम विविधता पायी गई। सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में शक्ति मूल्य एवं ज्ञानात्मक मूल्य उच्च स्तर का था कारण महिलाएँ आज अपने अधिकारों के प्रति जागरूकत है महिला सशक्त शक्ति बन चुकी है महिलायें भी समाज में आज पुरूषों के बराबर है इसलिए महिला शिक्षक भी अपनी शक्ति को पहचानते हुए शक्ति मूल्य अधिक महत्व देती है महिला शिक्षकों पुरूष शिक्षकों के मुकाबले अपने कर्त्तव्यों के प्रति अधिक सजग होती है ज्ञानात्मक मूल्य की अधिकता उनका अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग होने का संकेत है।

निष्कर्ष–

1. सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में शक्ति मूल्य तथा ज्ञानात्मक मूल्य उच्च स्तर के पाये गये तथा धार्मिक मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य निम्न स्तर का तथा अन्य मूल्य औसत स्तर के पाये गये। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में सबसे अधिक ज्ञानात्मक मूल्य पाया गया तथा सबसे कम आर्थिक मूल्य पाये गये। सभी दसों मूल्य सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में औसत स्तर पर पाये गये। सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में धार्मिक शक्ति एवं आर्थिक मूल्यों पर सार्थक अन्तर पाया गया। सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक एवं शक्ति मूल्य सार्थक रूप से अधिक, जबकि आर्थिक मूल्य सार्थक रूप से कम पाया गया।
2. सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में शक्ति मूल्य सबसे अधिक पाया गया तथा सबसे कम स्वास्थ्य एवं धार्मिक मूल्य पाये गये। सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में सबसे अधिक ज्ञानात्मक मूल्य पाये गये। सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में सबसे अधिक ज्ञानात्मक मूल्य पाये गये तथा सबसे निम्न स्वास्थ्य मूल्य पाये गये। इन विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों में सभी मूल्य औसत स्तर के पाये गये। उपरोक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के टी मान में विविधता प्राप्त नहीं हुई। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गई।
3. सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों के अध्ययन से निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि सरस्वती शिशु मन्दिर की महिला शिक्षकों में सबसे अधिक ज्ञानात्मक मूल्य

पाये गये तथा सबसे कम धार्मिक मूल्य पाये गये। सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों में भी सबसे अधिक ज्ञानात्मक मूल्य पाये गये तथा सबसे कम शक्ति मूल्य पाये गये। दोनों विद्यालयों की महिला शिक्षकों के धार्मिक एवं आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर था। सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों में सरस्वती शिशु मन्दिर की महिला शिक्षकों की अपेक्षा आर्थिक मूल्य सार्थक रूप से अधिक एवं धार्मिक मूल्य सार्थक रूप में कम पाया गया। अतः धार्मिक एवं आर्थिक मूल्य के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। अन्य मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था।

4. सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य में सबसे अधिक असमानता थी, जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य में सबसे कम विविधता पायी गई। सरस्वती शिशु मन्दिर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में शक्ति मूल्य एवं ज्ञानात्मक मूल्य उच्च स्तर का था कारण महिलाएँ आज अपने अधिकारों के प्रति जागरूकत है महिला सशक्त शक्ति बन चुकी है महिलायें भी समाज में आज पुरूषों के बराबर है इसलिए महिला शिक्षक भी अपनी शक्ति को पहचानते हुए शक्ति मूल्य अधिक महत्व देती है महिला शिक्षकों पुरूष शिक्षकों के मुकाबले अपने कर्त्तव्यों के प्रति अधिक सजग होती है ज्ञानात्मक मूल्य की अधिकता उनका अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग होने का संकेत है।

शैक्षिक निहितार्थ–

इस अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि मात्र सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों में सामाजिक धार्मिक ही उच्च स्तर पर पाये गये। इसके अतिरिक्त अन्य मूल्य निम्न स्तर या औसत स्तर पर उपस्थित थे, जबकि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में कोई भी मूल्य उच्च स्तर पर विद्यमान नहीं था। अतः शिक्षकों के विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। शिक्षकों में मूल्यों के विकास के लिए शिक्षक कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए।शिक्षकों के लिए विचार गोष्ठियों का अयोजन किया गया चाहिए इससे शिक्षकों को मूल्यों का विकास होगा।शिक्षक मूल्यवान है, अपने कर्तव्यों का भली भांति निर्वाह करते है उन शिक्षकों की प्रोत्साहित करना चाहिए एवं समाज द्वारा पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इससे अन्य शिक्षक मूल्यवान शिक्षकों को प्रेरणा स्त्रोत मानकर मूल्यवान होने के लिए प्रेरित होगें। एक शिक्षा का मूल्यवान होना इसलिए आवश्यक है क्योंकि शिक्षकों के मूल्यों का अनुसरण कर विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा और समाज एवं राष्ट्र को अराजकता की स्थिति को बचाया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच0 के0 (1995) अनुसंधान विधियॉ व्यवहारपरक विज्ञानों में आगरा, हर प्रसाद भार्गव, पृ0–1
2- Garrett, H.E. (1987) Statistic in psychology and education, Bombay Vakils, Effor and Simons Ltd.
3. गोस्वामी, एस0 एस0 (1983) ''उच्च माध्यमिक स्तर पर स्कूल के वातावरण में अध्यापकों के मूल्य का अध्ययन'' रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन खण्ड सोशियोलॉजी, पी–एच0डी0, एम0पी0यू0
4. चौधरी, के0 के0 (2009) ''अशासकीय, विद्याभारती एवं अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका लखनऊः भारतीय शिक्षा संस्थान, जनवरी–जून वर्ष–28, अंक–1, पृ0–39–50।
5. दीक्षिक सौम्या (2004) ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन'', एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध, एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

6. शर्मा, आर0 (2011) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0 सं0–400, 401।
7. शरीक, ए0एस0 (1984) माध्यमिक विद्यालयों के मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण और राजनैतिक मूल्यों की वरीयता का अध्ययन रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन, खण्ड सोशियोलॉजी, पी–एच0डी0 एजूकेशन ए0 एम0 यू0।
8. सिंह, रामपाल तथा शर्मा ओ0 पी0 (2007) "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0सं0–203।